नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

दिल्ली विस्फोट : सावधानी ही असली सुरक्षा कवच

दिल्ली के लाल किले के पास सोमवार को हुए कार धमाके ने पूरे देश को हिला दिया. यह घटना केवल एक आतंकी हमला नहीं, बल्कि हमारी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था की कमजोर नसों को उजागर करने वाला चेतावनी संकेत है. राष्ट्र की राजधानी, जहां हर कदम पर सुरक्षा के कठोर प्रावधान होने चाहिए, वहां इस तरह का विस्फोट होना हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम तकनीकी और मानवीय सतर्कता के बीच संतुलन बनाए रखने में कहीं चूक रहे हैं. यह दुखद है कि नौ निर्दोष जिंदगियां चली गईं और कई नागरिक घायल हुए.

शुरुआती जांच में सक्रिय आतंकी नेटवर्क के संकेत मिलना इस बात का प्रमाण है कि संगठित आतंक अब केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि हमारे शहरी ढांचे की गहराई तक अपनी जड़ें फैला चुका है. पुलवामा और उरी जैसी घटनाएं हमें पहले ही चेतावनी दे चुकी हैं कि आतंक का स्वरूप अब बदल चुका है,यह 'अनदेखी दरारों' से प्रवेश करता है, और उन दरारों में हमारी सुस्ती, असावधानी, तथा समन्वयहीनता शामिल है. देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती अब 'चेतावनी पर त्वरित प्रतिक्रिया' की है. किसी भी राज्य या एजेंसी के पास असीम संसाधन नहीं होते, इसलिए सुरक्षा चक्र में नागरिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है. यदि आम आदमी किसी संदिग्ध हलचल, वाहन या लावारिस वस्तु को तुरंत सूचना तंत्र तक पहुंचाए, तो अनेक संकटों को टाला जा सकता है. दुर्भाग्य यह है कि हमारा समाज अभी भी 'जब तक खुद पर असर न पड़े, तब तक मौन रहो' की प्रवृत्ति से बाहर नहीं आया है. यही निष्क्रियता आतंकवादियों का सबसे बड़ा हथियार बनती जा रही है.

सोशल मीडिया के दौर में अफवाहें और भय फैलाने वाले संदेश, किसी भी गोली या बम से अधिक नुकसानदेह साबित हो सकते हैं. असत्य सूचनाएं न केवल जन-मन में अस्थिरता फैलाती हैं, बल्कि सुरक्षा एजेंसियों के वास्तविक प्रयासों को भी भ्रमित करती हैं. ऐसे समय में 'सूचना-संयम' भी देशभक्ति का एक रूप है,केवल अधिकारियों द्वारा जारी पुष्ट सूचनाओं पर भरोसा करना ही विवेकपूर्ण आचरण है. दिल्ली विस्फोट ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि हमारी खुफिया एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल अब केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है. सूचना का प्रवाह जितना तेज़ और पारदर्शी होगा, उतनी ही शीघ्रता से खतरे को निष्क्रिय किया जा सकेगा. तकनीक अब केवल निगरानी का उपकरण नहीं, बल्कि सुरक्षात्मक पूर्वानुमान का साधन बन सकती है. यदि सीसीटीवी नेटवर्क में रीयल-टाइम एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित अलर्ट सिस्टम शामिल किए जाएं, तो संदिग्ध गतिविधियां तुरंत पहचान में आ सकती हैं.

लाल किला, हवाई अड्डे, मेट्रो स्टेशन, धार्मिक स्थल,ये सब 'सॉफ्ट टार्गेट' हैं जिन्हें हर संभव सुरक्षा परत की आवश्यकता है. प्रशिक्षित क्विक रिस्पॉन्स टीमें, साइबर इंटेलिजेंस यूनिटों का सशक्त समन्वय, और जनता के लिए सरल रिपोर्टिंग चैनल,ये तीन स्तंभ आधुनिक सुरक्षा नीति के अनिवार्य घटक हैं. हर बार जब कोई धमाका होता है, हम तत्काल अलर्ट जारी करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे वही सतर्कता शिथिल हो जाती है. असल समाधान उसी दिन से शुरू होता है, जब सतर्कता 'आदत' बन जाती है. कोई भी तकनीक, कोई भी हथियार उस जागरूकता की भरपाई नहीं कर सकता जो एक सजग नागरिक के पास होती है.

यह विस्फोट हमें याद दिलाता है कि सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा नहीं, बल्कि हर चेतन आंख और हर जिम्मेदार कदम का साझा संकल्प है. जब हम सब मिलकर 'सावधानी ही सुरक्षा है' को जीवन का स्थाई सिद्धांत बना लेंगे, तभी राष्ट्र वास्तव में सुरक्षित होगा.

नशे के जाल से युवाओं को बचाने की लड़ाई

डॉ. अभिजीत देशमुख

भारत में युवा पीढ़ी एक अदृश्य खतरे से जूझ रही है नशे की लत. आंकड़ों पर नजर डालें तो तस्वीर और भी चिंताजनक हो जाती है-देश में लगभग 10 करोड लोग किसी-न-किसी प्रकार के नशे के आदी हैं, और पिछले आठ वर्षों में मादक पदार्थों के सेवन में 70 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है. सबसे भयावह तथ्य यह है कि इन पीडितों में से 13 प्रतिशत की उम्र 20 वर्ष से भी कम है ? ये आंकड़े केवल संख्या नहीं हैं, बल्कि उन अनगिनत सपनों और परिवारों की कहानी कहते हैं जो नशे की अंधेरी गलियों में खो रहे हैं.

आज यह सवाल हम सबके सामने है- अपने देश के युवाओं को इस विनाशकारी दलदल से कैसे बचाया जाए? भारत के युवा और बढ़ती नशाखोरी-एक नज़र आंकड़ों पर हालिया सर्वेक्षण बताते हैं कि भारत में किशोरों और तरुणों के बीच नशे का प्रसार खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है. 2023 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि सर्वेक्षण में शामिल लगभग 32.8 प्रतिशत युवाओं ने कभी-न-कभी किसी नशीले पदार्थ का सेवन किया था और चिंताजनक रूप से 75.5 प्रतिशत मामलों में इसकी शुरुआत 18 साल का होने से पहले ही हो गई. इसका मतलब है कि हमारे किशोर बड़ी संख्या में कम उम्र में ही नशे के जाल में फँसने लगे हैं. भारत में युवा पीढ़ी एक अदृश्य खतरे से जूझ रही है-नशे की लत. आंकड़ों पर नज़र डालें तो तस्वीर और भी चिंताजनक हो जाती है- देश में लगभग 10 करोड़ लोग किसी-न-किसी प्रकार के नशे के आदी हैं, और पिछले आठ वर्षों में मादक पदार्थों के सेवन में 70 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है. सबसे भयावह तथ्य यह है कि इन पीड़ितों में से 13त्न की उम्र 20 वर्ष से भी कम है.

ये आंकड़े केवल संख्या नहीं हैं, बल्कि उन अनगिनत सपनों और परिवारों की कहानी कहते हैं जो नशे की अंधेरी गलियों में खो रहे हैं. आज यह सवाल हम सबके सामने है- अपने देश के युवाओं को इस विनाशकारी दलदल से कैसे बचाया जाए? भारत के युवा और बढ़ती नशाखोरी- एक नज़र आंकड़ों पर हालिया सर्वेक्षण बताते हैं कि भारत में किशोरों और तरुणों के बीच नशे का प्रसार खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है. 2023 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि सर्वेक्षण में शामिल लगभग 32.8 प्रतिशत युवाओं ने कभी-न-कभी किसी नशीले पदार्थ का सेवन किया था, और चिंताजनक रूप से 75.5 प्रतिशत मामलों में इसकी शुरुआत 18 साल का होने से पहले ही हो गई. इसका मतलब है कि हमारे किशोर बड़ी संख्या में कम उम्र में ही नशे के जाल में फँसने लगे हैं. इनमें सबसे ज्यादा उपयोग तंबाकू (करीब 26 प्रतिशत) और शराब (26 प्रतिशत) का देखा गया, उसके बाद भांग/कैनबिस (लगभग 9.5 प्रतिशत) का स्थान रहा. लेकिन तस्वीर यहीं खत्म नहीं होती आज कई युवा हेरोइन, मेथामफेटामीन जैसे घातक ड्रग्स या नींद की गोलियों जैसी नशीली दवाओं के भी शिकंजे में हैं. विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि नशे की लत अब हाशिए पर रहने वाली समस्या नहीं रही, बल्कि स्कूली उम्र के बच्चों से लेकर युवा पेशेवरों तक को अपनी चपेट में ले रही है.

युवाओं के नशे की ओर आकर्षित होने के कारण मनोवैज्ञानिक पहलू-कई बार युवा अपने भीतर के तनाव, अवसाद या भावनात्मक आघात से निपटने के लिए नशे की शरण लेते हैं. परीक्षाओं का दबाव, करियर की चिंता और व्यक्तिगत जीवन की उलझनों से उपजा तनाव उन्हें गलत राह चुनने पर मजबूर कर देता है. भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात न होने और इलाज की कमी की वजह से यह समस्या और गहरी होती जाती है निमहंस के एक आकलन के अनुसार, मानसिक रोगों से जूझ रहे करीब 80त्न लोग कलंक के डर से इलाज नहीं ले पाते. जब अवसाद या चिंता से उबरने के स्वस्थ रास्ते उपलब्ध नहीं होते, तो कई युवा क्षणिक राहत के लिए ड्रग्स का सहारा ले लेते हैं. सामाजिक कारक-दोस्तों या साथियों का दबाव (पीयर प्रेशर) अक्सर किशोरों को प्रयोग के तौर पर नशा आज़माने को उकसाता है.

> **युवाओं को नशे के चंगुल से बचाने के लिए समाधान और सुझाव**
> युवाओं को नशे के जाल से बचाने के लिए सामूहिक ज़िम्मेदारी निभानी होगी. परिवार, विद्यालय, समुदाय और सरकार सभी को मिलकर पहल करनी होगी. निम्नलिखित कुछ ठोस कदम हैं जो विभिन्न स्तरों पर उठाए जा सकते हैं. माता-पिता बच्चों के साथ भरोसेमंद संवाद बनाएं ताकि वे अपने दबाव या जिज्ञासा को खुलकर साझा कर सकें. उनके व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों पर नजर रखें अगर बेटे/बेटी के मूड में अचानक उतार-चढ़ाव आने लगें, वजन तेजी से गिरने लगे, आँखें हर समय लाल रहें, नींद ज्यादा आए या वह खुद को सबसे अलग-थलग रखने लगे तो सतर्क हो जाएँ. ये संकेत नशे की लत की ओर इशारा कर सकते हैं. ऐसी स्थिति में बिना गुस्सा हुए प्रेम और धैर्य के साथ बात करें. जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञों या परामर्शदाताओं की मदद लेने में हिचकें नहीं. शिक्षक एवं विद्यालय स्कूलों में नशीले पदार्थों के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता कार्यक्रम अनिवार्य रूप से चलाएँ.

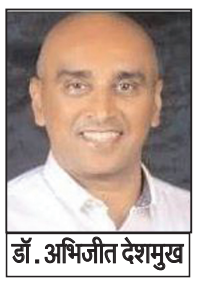

15 सालों में महिला कैदियों की संख्या में 61 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है.

महिला कैदियों के मासूम निरपराध ही भुगत रहे सजा

ओजस्कर पाण्डेय

आमतौर पर भारतीय समाज में ये माना जाता है कि महिलाएं अपराध नहीं करती, ज्यादातर अपराधों को अंजाम सिर्फ पुरुष देते हैं. अगर कोई महिला किसी अपराध की दोषी पाई भी जाती है तो भारतीय जेलों में भी महिला कैदियों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है. आंकड़ों के मुताबिक पिछले 15 सालों में महिला कैदियों की संख्या में 61 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है. बावजूद इसके, इन कैदियों के लिए जिन मूलभूत सुविधाओं की ज़रूरत होती है उसमें कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है. इसी वजह से महिला कैदियों के साथ होने वाले अमानवीय बर्ताव में भी बढ़ोतरी हुई है. महिला कैदियों के साथ होने वाले इस अमानवीय व्यवहार को समझने के लिए हमें दो सवालों पर ध्यान देना होगा. पहला तो यह कि महिला कैदियों की संख्या में इतनी बढ़ोतरी क्यों हो रही है और दूसरा कि मूलभूत सुविधाओं के स्तर पर, जेलों में महिलाएं किस भेदभाव को झेलती हैं? कई बार अपराध महिलाओं से भी हो जाता है, और उन्हें भी सजा होती है. लेकिन अगर महिला अपराधी माँ हो तो उनके बच्चों का क्या होता है?

कई बार ऐसा होता है कि महिला कैदी के रिश्तेदार उसके बच्चे को रखने से मना कर देते हैं. या फिर कई बार ऐसा भी होता है कि उनके बच्चों की देखभाल करने वाला ही कोई नहीं होता. हमारे क़ानून में कैदी माँ के लिए कुछ नियम हैं. अगर बच्चा 6 साल या उससे कम उम्र का है तो उसे संभालने के लिए जेल में क्रच बने होते हैं. कैदी माँ अपने बच्चे को वहां रख सकती है. ऐसे बच्चों के लिए जेल प्रशासन सरकार की मदद से क्रच का इंतजाम करता है. इतना ही नहीं हर जेल में मैन्युअल होता है. महिला कैदियों के लिए भी नियम कायदे होते हैं. आइये जानते हैं क्या हैं वो नियम. भारतीय जेल मैन्युअल के अनुसार गर्भवती महिला कैदियों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. गर्भावस्था और बच्चा पैदा होने के बाद उनको अन्य महिला क़ैदियों से अधिक खाना दिया जाना चाहिए. इतना ही नहीं गर्भवती कैदियों को उनकी सेहत के अनुसार खाना दिया जाना चाहिए. अगर महिला कैदी का बच्चा छह साल या उससे कम उम्र का है तो वो उसे अपने साथ जेल में रख सकती है.

जेल मैनुअल में ऐसी महिला अपराधियों के लिए 'मदर सेल' का प्रावधान है जिसमे वो अपने बच्चे के साथ रह सकती हैं. लेकिन मदर सेल में उन्ही महिला अपराधियों को जगह मिल पाती है जिनके परिवार या बच्चों के पिता उन्हें अपनाने से इनकार कर देते हैं. जेल मैनुअल में इतने प्रावधान होने के बावजूद भी जेलों में महिला कैदियों की दशा दयनीय है खासतौर से उन महिलाओं की जो विचाराधीन कैदी हैं. ज्यादातर महिला कैदियों को जेल मैनुअल की जानकारी ही नहीं है. यहाँ तक कि उन्हें ये भी पता नहीं होता कि उनका केस कहाँ तक पहुँचा. जानकारी के अभाव में कई माँ ऐसी हैं जो कर रही हैं. लेकिन जरूरी नहीं कि वो उन्हें उनके खोये हुए बच्चो से मिलवा पाएं.

बच्चे भगवान का रूप होते हैं, उनकी मुस्कराहट को ईश्वर की कृपा माना है. बच्चों के चंचल स्वभाव के कारण उनकी हर गलती को आनंद का हिस्सा माना जाता है. ऐसे बेनुगाह फितरत वाले चार मासूमों को मानो वसीयत में ही जेल मिली है. कारागार में बंद चार महिलाओं के साथ उनके मासूम बच्चे भी यहां पल रहे हैं. इनमें से स्कूल भी जाता है, जिसका सारा खर्च और जिम्मेदारी जेल प्रशासन उठाता है.

उत्तर प्रदेश में इस समय करीब 432 बच्चे मां के साथ सजा काट रहे हैं. इनमें से अधिक दहेज के मामले में सजा काट रही हैं. कुछ मामले हत्या का है. अब प्रश्न है कि इन महिलाओं के साथ बच्चे जो मां के साथ जेल में रह रहे इन बच्चों का जाने की किस गुनाह की सजा मिल रही है. इनसे मिलने न तो उनके परिजन आते हैं और न ही सगे संबंधी. जेल में बंद अन्य महिलाएं उन्हें अपना दुलार लुटाती हैं.

> महिला एंव बाल कल्याण मंत्रालय की रिपोर्ट में भी इस बात का जिक्र किया गया है कि 'मां' क़ैदियों के लिए जो सुविधाएं हैं वो पर्याप्त नहीं हैं और उनमें सुधार की ज़रूरत है. रिपोर्ट में 134 सुझाव दिए गए हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण ये हैं. जिन जेलों में बच्चों के लिए क्रच का इंतजाम नहीं है, वहां ये सुविधा उपलब्ध कराई जाए. जिन महिला क़ैदियों के बच्चे छह साल से बड़े हैं और देख-रेख करने वाला कोई और नहीं, उन्हें 'चाइल्ड केयर होम' भेजने की ज़िम्मेदारी भी जेल प्रशासन निभाएगा. महिला क़ैदियों के जेल में रहने के दौरान परिवार से संबंध बना रहे इसके लिए उन्हें समय-समय पर परिवार से मिलने जाने दिया जाए. इतना ही नहीं महिला क़ैदियों के लिए वकील, काउंसलर की व्यवस्था पर अधिक ज़ोर दिया जाए और जेल से छूटने के बाद जीविका चलने के लिए भी उन्हे तैयार किया जाए. जिन महिला विचाराधीन क़ैदियों ने अपने जुर्म की अधिकतम सज़ा का एक तिहाई समय जेल में काट दिया हो, उनकी बेल पर रिहाई का प्रावधान करने की बात कही गई है.

थरूर चाहते हैं चर्चा में बने रहना

कांग्रेस ने स्वयं को थरूर के बयान से दूर कर लिया है और कहा है कि वह कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य हैं और पार्टी की लोकतांत्रिक और उदार भावना का लाभ उठाते हुए अपने विचार रखते रहते हैं.

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व अवर सचिव तथा मनमोहन सिंह सरकार में विदेश राज्यमंत्री रह चुके शशि थरूर को कांग्रेस ने पहले ही हाशिये पर डाल रखा है. वजह यह थी कि उन्होंने मल्लिकार्जुन खड़गे के खिलाफ कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ा था. उस चुनाव में खड़गे की जीत हुई थी. थरूर केरल की राजनीति में अपना प्रभाव रखते हैं. वह चर्चा में बने रहने के लिए कुछ न कुछ बयान दिया करते हैं जो कांग्रेस नेताओं को पसंद नहीं आता. बीजेपी के सहसंस्थापक और वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के 98वें जन्मदिन पर उन्हें बधाई देते हुए शशि थरूर ने मत व्यक्त किया कि जब जवाहरलाल नेहरू का संपूर्ण करिअर सिर्फ चीन से युद्ध में हार से नहीं आंका जा सकता और इंदिरा गांधी को भी सिर्फ इमरजेंसी की वजह से नकारा नहीं जा सकता वैसे ही हमें लालकृष्ण आडवाणी के प्रति सौजन्य दिखाना चाहिए. आडवाणी की राम जन्मभूमि आंदोलन में प्रमुख भूमिका थी परंतु इस एक घटना की वजह से उनकी दीर्घ सेवाओं को कम नहीं आंका जाना चाहिए. कांग्रेस ने स्वयं को थरूर के बयान से दूर कर लिया है और कहा है कि वह कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य हैं और पार्टी की लोकतांत्रिक और उदार भावना का लाभ उठाते हुए अपने विचार रखते रहते हैं. उनकी राय पार्टी का मत नहीं है. थरूर ने बीजेपी के वयोवृद्ध नेता के पक्ष में अपनी राय रखी है लेकिन मोदी सरकार ने भी आडवाणी का सम्मान करते हुए उन्हें राष्ट्र के सर्वोच्च नागरी सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था. यह बात अलग है कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आडवाणी और मुरलीमनोहर जोशी जैसे बुजुर्ग नेताओं को उस परामर्श मंडल में डाल दिया गया था जिसका परामर्श कभी लिया ही नहीं गया. एक समय आडवाणी के निकटवर्ती नेताओं में सुषमा स्वराज, अरुण जेटली, शिवराजसिंह चौहान, वेंकैया नायडू आदि थे. कराची जाकर जिन्ना की तारीफ करना आडवाणी को महंगा पड़ा था. तभी से संघ ने उनसे नजरें फेर ली थीं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

विचार करो तो बहुत कुछ है क्योंकि वाशिंगटन सुंदर है

अमेरिका की राजधानी का नाम वाशिंगटन डीसी पड़ा है. डीसी इसलिए लगाया जाता है क्योंकि वह डिस्ट्रक्ट ऑफ कोलंबिया में है.

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, मानना होगा कि वाशिंगटन सुंदर है. उसकी जितनी तारीफ की जाए, कम है. यह ऐसा नाम है जो खबरों में बना रहता है. सारी दुनिया की निगाहें वाशिंगटन के कदमों पर रहती हैं.

हमने कहा, पहले तो यह स्पष्ट कीजिए कि आप किस वाशिंगटन की बात कर रहे हैं? क्या आप भारतीय हरफनमौला क्रिकेट खिलाड़ी वाशिंगटन सुंदर की प्रशंसा कर रहे हैं जिन्हें ऑस्ट्रेलिया में आयोजित टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सीरीज में इम्पैक्ट प्लेयर ऑफ द सीरीज के गौरवपूर्ण पुरस्कार से नवाजा गया है. वाशिंगटन का 57 मैचों में प्रभावशाली रिकार्ड रहा है. होबार्ट में खेले गए तीसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच में उन्होंने 23 गेंद में 4 छक्के और 3 चौके की मदद से 49 रन की पारी खेली और भारत को 5 विकेट से जीत दिलाई.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति और ब्रिटिश हुकूमत से आजादी दिलाने वाले योद्धा का नाम जॉर्ज वाशिंगटन था. उन्हीं के नाम पर अमेरिका की राजधानी का नाम वाशिंगटन डीसी पड़ा है. डीसी इसलिए लगाया जाता है क्योंकि वह डिस्ट्रक्ट ऑफ कोलंबिया में है. इसके अलावा सैनफ्रांसिस्को से लगा हुआ वाशिंगटन नामक राज्य भी है जो अमेरिका के पश्चिमी छोर पर है. वाशिंगटन डीसी सचमुच सुंदर है. वहां अमेरिकी राष्ट्रपति का निवास व्हाइट हाउस है. वहां वाशिंगटन मेमोरियल, लिंकन मेमोरियल और जेफरसन मेमोरियल भी हैं. वहां अनेक म्यूजियम हैं जिनमें गोगार्ड स्पेस म्यूजियम देखने लायक है. वहां अपोलो सीरीज के अंतरिक्ष यान और चंद्रमा पर कदम रखने वाले एस्ट्रोनॉट नील आर्मस्ट्रॉन्ग, माइकल कालिंस व एल्विन एल्ड्रन के स्पेस सूट रखे हैं. एविएशन हिस्ट्री के सेक्शन में राइट बंधुओं के पहले विमान का चित्र व प्रतिकृति भी है.

हमने कहा, न्यूयॉर्क शहर बेहद ग्लैमरस है लेकिन वाशिंगटन में ऐतिहासिकता झलकती है. अमेरिका जाने वालों को यह दोनों शहर अवश्य देखने चाहिए. यदि वीजा की दिक्कत से जाना संभव न हो तो अपने देश के क्रिकेट मैदान में जाकर वाशिंगटन सुंदर के दर्शन कर लीजिए. उसकी गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनों सुंदर हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12078 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. दूसरों को हानि पहुंचाने का गुप्त प्रयत्न या षड्यंत्र 2. राजस्व (टैक्स) (सं.) 3. नदी जलाशय आदि के किनारे स्नानादि के लिए बना स्थान 4. वृक्ष का नीचे वाला भाग जिसमें डालियां नहीं होती 5. बड़ा भारी, आदरणीय व्यक्ति 8. चांदी 10. जोर से मलकर किसी वस्तु को साफ करना, अभ्यास करना 13. एक प्रसिद्ध मात्रिक छंद 14. जन्म और मृत्यु के बीच का समय 16. वह धर्माचार्य जो ईश्वर का संदेश लोगों को सुनाने आते हैं, नवी (उर्दू) 18. छोटी पहाड़ी, मिट्टी पत्थर आदि का उभरा हुआ भूभाग 19. मनुष्य, आदमी 21. ब्याज 23. आधे पैसे का पुराना सिक्का

बाएं से दाएं
1. कुल्हाड़ी का घाव, घातक चोट 6. उगना, जड़ना 7. माला, पराजय 9. क्रमानुसार लिखी जाने वाली संख्या 11. जो बाद में पैदा हुआ हो, छोटा भाई 12. वह काम जो कपड़े पर सलमे सितारे आदि से किया जाता है (उर्दू) 15. उबालकर पकाया हुआ चावल 16. धारदार, नुकीला 17. किसी को मोहित करने के लिए की जाने वाली मनोहर चेष्टाएं 20. बढ़इयों का लकड़ी गढ़ने का एक औजार 22. स्वर्ग की गाय जो सब मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाली मानी जाती है 24. दांत (सं.) 25. बहुत बड़ा प्राकृतिक सरोवर 26. लज्जा, शर्म, हया

Solution 12077

रा	ज	कु	मा	र		क	म
क्ष	मा		न		ख	ल	ल
स	दा	ब	हा	र		मा	या
	र		नि	वा	स		नि
मु		श			म	शा	ल
आ	ग	ब	बू	ला		न	
ब	त	न		स	र	दा	र
जा		म		क	स	र	त

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भाईयों के सहयोग से अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय मधरता पूर्ण रहेगा, भाईयों का कार्यक्षेत्र में सहयोग रहेगा, वर्ष के मध्य में नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, वर्ष के अन्त में अनिश्चय की स्थिति का सामना करना पड़ेगा, आजीविका के क्षेत्र में अचानक चिन्ता रहेगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन सुखमय मधुरतापूर्ण रहेगा, वातावरण सुखद रहेगा,कर्क राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से लाभ होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को जीवन में मधुरता आयेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का आजीविका में लाभ होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष के प्रति विशेष सजगता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से शांत, गंभीर, तथा महत्वाकांक्षी, अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार एवं क्रोधी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, कला और साहित्य के क्षेत्र में अच्छी रूचि रहेगी, माता का भक्त होगा.

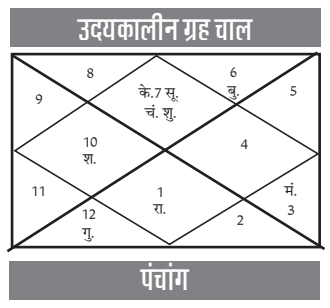

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 21 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमीं बुधवासरे रातअंत 4/7, आश्लेषा नक्षत्रे रात 12/21, शुक्ल योगे दिन 2/28, बालव करणे सू.उ. 6/34, सू.अ. 5/26, चन्द्रचार कर्क रात 12/21 से सिंह, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमीं को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, सरसों, तिल, तेल, मटर, अरंडी, रूई, सूत, कपास, आदि में तेजी होगी, नारियल, सुपारी, बादाम, दाख, छुहारा, के भाव में साधारण नरमी का रूख रहेगा, बारदाना के भाव में घट बढ़ रहेगी. भाग्यांक 4821 है.

मेष- व्यापारिक सौदेबाजी लाभकारी रहेगी, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता होगी, पद प्रतिष्ठा रहेगी, यश मिलेगा. अनावश्यक विवाद न बढ़ाये.

वृषभ- प्रियजन की मुलाकात उपयोगी रहेगी, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, व्यर्थ के विवादों से दूर रहना हितकर रहेगा, खर्च की पूर्ति होगी.

मिथुन- दूसरों की बातों में आकर अपनों से दूरियां बना लेंगे, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, शारीरिक सुख एवं पारिवारिक चिन्ता दूर होगी, यश मिलेगा.

कर्क- उन्नति के लिये अवसर मिलेंगे.निजी मामलोंमें उत्साह बना रहेगा, किये गये प्रयासों की प्रशंसा होगी, सोचे हुये कार्य में गति आयेगी.

सिंह- झूठ बोलकर लोग भ्रमित कर सकते हैं, हक के लिये संघर्ष करना पडेगा, स्वास्थ्य में सुधार होगा, कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी.

कन्या- कोर्ट कचहरी के मामले सुलझेंगे, सामूहिक कार्यो में सबकी सहमति से कार्य करें, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, महत्वपूर्ण कार्यो की पूर्ति होगी.

तुला- भय से छुटकारा मिलेगा, मित्रों से कहासुनी का दुख होगा, कामकाजी यात्रा का योग है, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात होगी.

वृश्चिक- उच्च अध्ययन के अच्छे परिणाम आयेंगे, सुख सुविधा पर खर्च होगा, अनावश्यक कार्यो में धन खर्च होगा, आय में कमी हो सकती है.

धनु- तनाव दूर होगा, विपरीत परिस्थिति में समझौता करना पड़ सकता है, पराक्रम में वृद्धि होगी, नये कार्यो के प्रति रूचि रहेगी. नवीन समाचार प्राप्त होंगे.

मकर- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी, पदोन्नति का योग है.

कुम्भ- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी, पदोन्नति का योग है.

मीन- मित्रों की मदद से अधूरे कार्य पूरे होंगे, श्रम साध्य कार्यो में समय व्यतीत होगा, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

SUDOKU 7210

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7209

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1